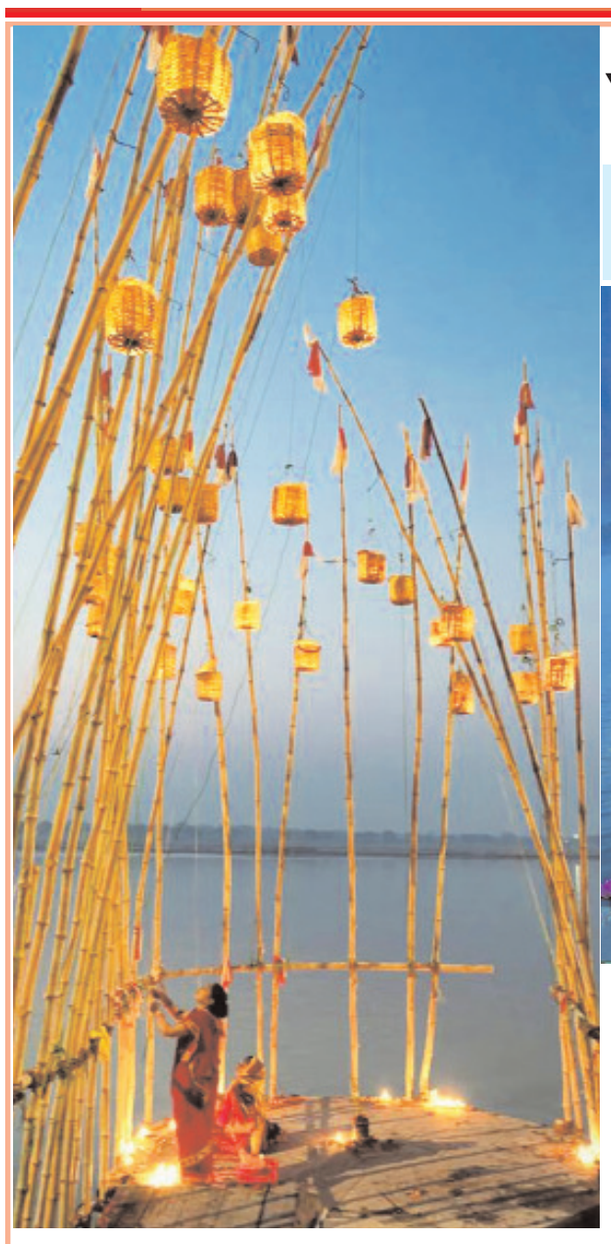
26 OCT 12 2026.qxd 25-10-2026 21:39 Page 1



द्वादश माससमें खास है कार्तिक मास

कार्तिक मास भगवान् श्रीविष्णु एवं भगवती श्रीलक्ष्मी जी को है समर्पित, कीजिए दीपदान, होगी आरोग्य-सौभाग्य की प्राप्ति



हिन्दू सनातन धर्म में धार्मिक व पौराणिक मान्यता के अनुसार कार्तिक मास को द्वादश मास में सर्वश्रेष्ठ मास माना गया है। यह मास भगवान् विष्णुजी एवं भगवती लक्ष्मी जी को समर्पित है, जिसमें इनकी पूजा-अर्चना की विशेष महिमा है। कार्तिक मास में शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि के दिन देवता जागृत होते हैं। कार्तिक मास में स्नान-दान-देव अर्चना की विशेष महत्व है। कार्तिक मास को अत्यन्त पावन मास की उपाधि दी गई है। हिन्दू धर्म में उत्सव की श्रृंखला इसी मास से प्रारम्भ होती है। इस बार कार्तिक मास के धार्मिक-यम-नियम-व्रत-संयम आदि 27 अक्टूबर, मंगलवार से प्रारम्भ होकर कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा 24 नवम्बर, मंगलवार तक रहेंगे। ज्योतिषविद् विमल जैन ने बताया कि शरद पूर्णिमा से ही भगवती श्रीलक्ष्मीजी की महिमा में उनकी आराधना के साथ दीपदान एवं धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ हो जाते हैं। शास्त्रों में ऐसा कहा गया है कि कार्तिक मास के समान कोई दूसरा मास नहीं है, सतयुग के समान कोई युग नहीं है, वेद के समान कोई शास्त्र नहीं है और गंगाजी के समान कोई तीर्थ नहीं है। स्कन्दपुराण के अनुसार यह मास लक्ष्मी प्रदाता, सद्बुद्धिदायक एवं आरोग्यप्रदायक माना गया है। वर्ष के द्वादश मास में कार्तिक मास को ही धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष को देने वाला माना गया है। कार्तिक मास में तुलसीजी व पीपल वृक्ष की पूजा की जाती है। इस मास में यमदेव को प्रसन्न करने के लिए आकाशदीप प्रज्वलित किए जाते हैं। कार्तिक मास में एक माह तक आंवले के वृक्ष का सिंचन व पूजन करना फलदायी माना गया है। मासपर्यन्त भगवान विष्णुजी को आंवला अर्पित करके उनका पूजन करने पर लक्ष्मीजी की प्राप्ति बतलाई गई है। काला तिल व आंवले का चूर्ण लगाकर स्नान करने से समस्त पापों का शमन होता है। इस मास में नियमपूर्वक संकल्प के साथ व्रत रखकर गंगा-स्नान के पश्चात् दान करने से तीर्थयात्रा के समान फल की प्राप्ति होती है। कार्तिक मास में स्नान-दान व पुण्य करने की काफी महिमा है। इस मास में सूर्य के दक्षिणायन होने से असुरिकाल माना जाता है। धर्मशास्त्रों के अनुसार इस मास में स्नान-ध्यान करके, व्रत रखकर भगवान विष्णुजी की पूजा करना विशेष पुण्य फलदायी रहता है। धार्मिक मान्यता के मुताबिक श्रीकृष्ण-राधा का पूजन-अर्चन करने से प्रभु की असीम कृपा मिलती है तथा जीवन में सुख-समृद्धि खुशहाली का मार्ग प्रशस्त होता है। कार्तिक मास में ब्रह्मचर्य नियम का पालन करना चाहिए। भूमि पर शयन करें। ब्रह्ममुहूर्त में (सूर्योदय से पूर्व) उठकर स्नान व ध्यान करें। गंगाजी में कमर तक जल में खड़े होकर पूर्ण स्नान करें। सात्विक भोजन करें। भगवान विष्णुजी की आराधना करें। पीपल वृक्ष व तुलसी जी के पौधे की भी धूप-दीप से पूजा करें। कार्तिक मास में व्रतकर्ता व साधक को अपने परिवार के अतिरिक्त अन्यत्र किसी दूसरे का कुछ भी (अन्न) ग्रहण न करना चाहिए। चना, मटर, उड़द, मूंग, मसूर, राई, लौकी, गाजर, बैंगन, बासी अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिए। साथ ही लहसुन, प्याज और तेल का उपयोग नहीं करना चाहिए। शरीर में तेल नहीं लगाना चाहिए। कार्तिक मास की द्वितीया, सप्तमी, नवमी, दशमी, त्रयोदशी व अमावस्या तिथि के दिन तिल व आंवले का प्रयोग नहीं करना चाहिए। कार्तिक मास में स्नान व व्रत करने वालों को केवल कार्तिक कृष्ण (नरक) चतुर्दशी के दिन ही तेल लगाना चाहिए। मास के अन्य दिनों में तेल नहीं लगाना चाहिए। फटे या गन्दे वस्त्र धारण नहीं करना चाहिए, स्वच्छ वस्त्र ही धारण करना चाहिए। ऐसी मान्यता है कि इस माह में भगवान विष्णु की महिमा में व्रत रखने पर ग्रहजनित दोषों से मुक्ति मिलती है तथा संकटों का निवारण होता है।

कार्तिक मास के प्रमुख व्रत-पर्व

* 27 अक्तूबर : स्नान-दान-व्रत, कार्तिक मास के यम-नियम-संयम प्रारम्भ, अशून्यशयन व्रत * 29 अक्तूबर : संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (करवा चौथ) व्रत * 1 नवम्बर : अहोई अष्टमी व्रत, कालाष्टमी व्रत, श्रीराधाष्टमी व्रत * 5 नवम्बर : रम्भा एकादशी व्रत (सबका) * 6 नवम्बर : शुक्र प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी (धनतेरस), धन्वन्तरि जयन्ती * 7 नवम्बर : मास शिवरात्रि व्रत, रूप (नरक) चतुर्दशी, हनुमान जयन्ती, छोटी दीपावली * 8 नवम्बर : दीपावली पर्व * 9 नवम्बर : महावीर निर्वाण दिवस (जैन), स्नान-दान की अमावस्या, सोमवती अमावस्या * 10 नवम्बर : गोवर्धन पूजा, अन्नकूट * 11 नवम्बर : भैयादूज, यमद्वितीया, चित्रगुप्त पूजन * 13 नवम्बर : वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, सूर्यषष्ठी व्रत का प्रथम संयम *14 नवम्बर : सूर्यषष्ठी व्रत का द्वितीय संयम (सौभाग्य पंचमी) * 15 नवम्बर : सूर्यषष्ठी (डाला छठ) व्रत का तृतीय संयम, सूर्यषष्ठी व्रत का पारण * 17 नवम्बर : श्रीदुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी, अन्नपूर्णा अष्टमी व्रत * 18 नवम्बर : अक्षय (आंवला, कुष्माण्डा) नवमी व्रत * 20 नवम्बर : देव (हरि) प्रबोधिनी/देव उठानी एकादशी (स्मार्त), तुलसी विवाह * 21 नवम्बर : देव (हरि) प्रबोधिनी/देव उठानी एकादशी (वैष्णव) * 22 नवम्बर : रवि प्रदोष व्रत * 23 नवम्बर : वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत * 24 नवम्बर : स्नान-दान-व्रतादि की कार्तिक पूर्णिमा व्रत, गुरुनानक जयन्ती, देव-दीपावली। कार्तिक मास के यम-नियम-व्रत-स्नानादि के धार्मिक अनुष्ठान की समाप्ति।



खूनी व बादी बवासीर में बेहद असरकारक
अर्शवेदा कैप्सूल
सुविचार
जो लोग हर दिन अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश करते हैं, वे अंत में सफलता जरूर पाते हैं।
• 100% आयुर्वेदिक • सुरक्षित • असरदार
Customer Care : 9628078000
www.rphealthgroup.com
Also available at TATA 1mg | amazon | Flipkart



अपनी जिंदगी

गहन अंतर्यात्रा

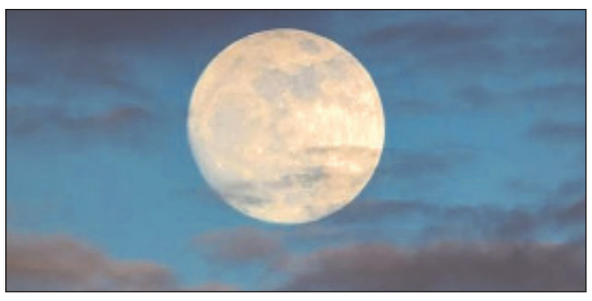
गुरुदेव श्री श्री रवि शंकर

योग मात्र शारीरिक भंगिमाओं का समूह नहीं, अपितु अनंत से एकाकार होने की एक गहन अंतर्यात्रा है। इस यात्रा का सूत्रपात 'विस्मय' से होता है। जब तक मनुष्य ज्ञात की सीमाओं में बँधा रहता है, वह अज्ञात के अगाध सागर में प्रवेश नहीं कर पाता। विस्मय योग की वह आधारशिला है, जहाँ पहुँचकर बुद्धि के समस्त निश्चय शिथिल हो जाते हैं और चैतन्य की नवीन संभावनाएँ जन्म लेती हैं। साधारणत: ज्ञान को प्रकाश माना जाता है, परंतु इंद्रियजनित ज्ञान प्राय: चेतना को सीमित परिधि में आबद्ध कर देता है। जब मनुष्य किसी विषय का 'निश्चय' कर लेता है, तो वहाँ आश्चर्य का लोप हो जाता है। उदाहरण के लिए, वृक्ष पर फल देखकर हमें विस्मय नहीं होता, क्योंकि हमारे पास 'ज्ञान' है कि वृक्ष तो फल ही उत्पन्न करेगा। योग इस 'ज्ञेय' (जानने योग्य वस्तु) से हटकर 'ज्ञाता' (जानने वाले) में स्थित होने की प्रक्रिया है। जहाँ निश्चय में इंद्रिय-ज्ञान का अहंकार है, वहीं आश्चर्य में योग की विनम्रता निहित है। मानव चेतना अधिकांश समय बाह्य जगत के दृश्यों के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेती है, जिसे 'वृत्ति-सारूप्य' कहा जाता है। महर्षि पतंजलि ने चित्त की पाँच प्रमुख वृत्तियों का विवेचन किया है, जो दृष्टा को उसके वास्तविक स्वरूप से विमुख रखती है। प्रमाण सत्य की पुष्टि के लिए आधार खोजना है। यह प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम (शास्त्र) के रूप में सक्रिय रहता है। विपर्यय मिथ्या ज्ञान को कहा जाता है। जब वस्तु को उसके वास्तविक स्वरूप में न जानकर कुछ और ही समझ लिया जाता है। विकल्प , वह वस्तु-शून्य कल्पना है। जो अस्तित्व में नहीं है, उसकी कल्पना करना विकल्प है। निद्रा, निद्रा अर्थात् नींद में चले जाना, जड़ता में आ जाना।। स्मृति, अनुभूत विषयों का पुनरावर्तन है। अतीत के अनुभवों को बनाए रखना ही स्मृति है। इन वृत्तियों के भँवर से निकलने के लिए 'अभ्यास' और 'वैराग्य' अनिवार्य हैं। 'तत्र स्थितौ यत्नोऽभ्यास:'—अर्थात् उस दृष्टा-भाव में स्थिर होने का निरंतर प्रयास ही अभ्यास है। जब यह अभ्यास दीर्घकाल तक, बिना किसी अंतराल के और श्रद्धापूर्वक किया जाता है, तब चित्त की 'दृढ़भूमि' तैयार होती है। वैराग्य का अर्थ संसार से पलायन अथवा रसहीनता नहीं है। यह विषयों के प्रति तृष्णा का अभाव है। जब चेतना को परम आनंद का रस प्राप्त होता है, तो क्षुद्र विषयों के प्रति आसक्ति स्वत: ही क्षीण हो जाती है। साधना की चरम परिणति 'समाधि' है, जहाँ बुद्धि राग-द्वेष से मुक्त होकर समत्व में स्थित हो जाती है। समाधि कोई रहस्यमयी मृत्यु-तुल्य अवस्था नहीं, अपितु जीवन का सर्वाधिक जाग्रत क्षण है।

> नद्रा, निद्रा अर्थात् नींद में चले जाना, जड़ता में आ जाना।। स्मृति, अनुभूत विषयों का पुनरावर्तन है। अतीत के अनुभवों को बनाए रखना ही स्मृति है। इन वृत्तियों के भँवर से निकलने के लिए 'अभ्यास' और 'वैराग्य' अनिवार्य हैं। 'तत्र स्थितौ यत्नोऽभ्यासः'–अर्थात् उस दृष्ट-भाव में स्थिर होने का निरंतर प्रयास ही अभ्यास है। जब यह अभ्यास दीर्घकाल तक, बिना किसी अंतराल के और श्रद्धापूर्वक किया जाता है, तब चित्त की 'दृढ़भूमि' तैयार होती है।

चंद्रमाके हर रूप का अलग संकेत

सोते समय दिखाई देने वाले सपनों को अक्सर लोग सुबह उठते ही भूल जाते हैं, लेकिन स्वप्न शास्त्र में कई सपनों को जीवन से जुड़े संकेतों के रूप में देखा जाता है। सपने में सांप, गाय या दूसरे जीव दिखाई देने पर लोग उनके



अर्थ जानने की कोशिश करते हैं, लेकिन चांद नजर आने पर उसे सामान्य सपना समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। उज्जैन के आचार्य आनंद भारद्वाज के अनुसार, सपने में चंद्रमा का दिखाई देना मन की स्थिति, भावनाओं और भविष्य से जुड़ी संभावनाओं का प्रतीक माना जाता है। हालांकि, इसका अर्थ इस बात पर निर्भर करता है कि चांद किस रूप में दिखाई दिया। स्वप्न शास्त्र की मान्यताओं के अनुसार, सपने में पूरा और चमकदार चांद देखना शुभ माना जाता है। इसे जीवन में खुशहाली, पारिवारिक सुख और मनोकामनाएं पूरी होने से जोड़कर देखा जाता है। कुछ मान्यताओं में ऐसा सपना धन लाभ या विदेश यात्रा की संभावना का भी प्रतीक माना गया है। वहीं, आधा चांद दिखाई देना जीवन में नए अवसर मिलने, कारोबार में तरक्की और रिश्तों में मधुरता आने का संकेत माना जाता है। यदि सपने में चंद्रमा बादलों के पीछे छिपता हुआ दिखाई दे, तो इसे मन की उलझनों और कामकाज में आने वाली संभावित रुकावटों से जोड़कर देखा जाता है। मान्यताओं के मुताबिक, ऐसा सपना किसी इच्छा के पूरा होने में देरी या निर्णय लेने में परेशानी का प्रतीक हो सकता है। दूसरी ओर, लाल रंग का चांद दिखाई देने को कुछ स्वप्न व्याख्याओं में तनाव, विवाद और भावनात्मक बेचैनी से जोड़कर देखा गया है।

जीवन में सुख-शांति, समृद्धि और तरक्की के लिए सकारात्मक ऊर्जा का होना बेहद जरूरी

वास्तु शास्त्र एक प्राचीन भारतीय विज्ञान और कला है, जो भवनों, घरों, मंदिरों और अन्य संरचनाओं की बनावट, निर्माण और स्थान से जुड़ी ऊर्जा में संतुलन लाने का काम करता है। जीवन में सुख-शांति, समृद्धि और तरक्की हासिल करने के लिए सकारात्मक ऊर्जा का होना बेहद जरूरी है। हमारे रोजाना के जीवन में काम आने वाली कुछ खास वस्तुओं को लेकर भी वास्तु शास्त्र में नियम बताए गए हैं, जिसके मुताबिक कुछ खास चीजों को भूलकर भी सीधे जमीन पर नहीं रखना चाहिए। यदि आप इन चीजों को जमीन पर रख देते हैं, तो आपको वास्तु दोष की समस्या का सामना करना पड़ सकता है। हिंदू धर्म और वास्तु शास्त्र के अनुसार घर में स्थापित शिवलिंग या शालिग्राम को भूलकर भी जमीन पर नहीं रखना चाहिए। ऐसा करना अशुभ और अनादर माना जाता है। हिंदू दर्शन में ये दोनों ही चीजें अत्यंत पवित्र मानी जाती हैं, इसलिए इन्हें पूजा की वेदी पर ही रखना चाहिए। इसके अलावा गंदे हाथों से स्पर्श करने से भी बचना चाहिए। घर में स्थापित देवी-देवताओं की मूर्ति धार्मिक नजरिए से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। मूर्ति को सीधे जमीन पर रखने से यह अशुद्ध और अपमान माना जाता है। ऐसे में कभी भी मंदिर की साफ-सफाई करते हुए भी पूजा कक्ष में स्थापित देवता की मूर्ति या चित्र को हमेशा पूजा की साफ वेदी पर रखें। अगर आपके पास पूजा की वेदी न हो तो उसे किसी साफ कपड़े के ऊपर रखें। पूजा में इस्तेमाल होने वाले शंख, दीपक और यंत्र को भूलकर भी जमीन पर नहीं रखना चाहिए। ऐसा करने धार्मिक नजरिए से अपमान समझा जाता है। दरअसल शंख को भगवान विष्णु का प्रतीक माना जाता है, जबकि दीपक अग्नि देवता का प्रतीक और



श्रीयंत्र को देवी-देवता की ऊर्जा का केंद्र माना जाता है। इन सभी वस्तुओं को सीधे तौर पर जमीन पर रखने से जातक को धन की हानि का भी सामना करना पड़ सकता है। वास्तु शास्त्र और धार्मिक सिद्धांतों के मुताबिक, भगवद्गीता, रामायण, पुराण और दूसरे अन्य धार्मिक ग्रंथों को कभी भी भूलकर फर्श पर नहीं रखना चाहिए। इसके बजाय इन्हें साफ कपड़े, पुस्तक स्टैंड या अलमारी में रखना ज्यादा बेहतर माना जाता है। किताबों को साफ-सुथरा और सुरक्षित रखने की आदत धार्मिक सम्मान के साथ-साथ उनकी देखभाल करना भी बेहद जरूरी है। इसके अलावा तुलसी और पूजा के फूल, कपूर, चंदन और गोरोचन, रत्न, सोना और पवित्र सामग्री को भूलकर भी जमीन पर नहीं रखना चाहिए। ऐसा करने से धन-धान्य में कभी भी कमी नहीं आती है।

आत्मा अजर-अमर है, शरीर नश्वर

जीवन में किसी अपने को खोने का दुख शब्दों में बयां करना आसान नहीं होता। किसी प्रियजन के जाने से मन में खालीपन, बेचैनी और कई सवाल पैदा होते हैं। कभी-कभी इंसान यह समझ नहीं पाता कि इस दुख से बाहर कैसे निकले और जीवन को दोबारा कैसे संभाले। ऐसे समय में श्रीमद्भगवद्गीता मन को नई दिशा देने में मदद करती है। गीता के श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाते हुए जीवन, मृत्यु और आत्मा के बारे में ऐसी बातें बताई हैं, जो दुख की घड़ी में धैर्य और आत्मचिंतन का रास्ता दिखाती हैं। गीता के दूसरे अध्याय के 11वें श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को शोक और विवेक के संबंध में समझाते हैं। यह श्लोक आपके मन को भी शांत कर सकता है।



श्रीमद्भगवद्गीता का श्लोक-

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिता: ॥

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, तुम उन लोगों के लिए शोक कर रहे हो, जिनके लिए शोक करना उचित नहीं है, जबकि तुम्हारी बातें ज्ञानियों जैसी हैं। ज्ञानी व्यक्ति न जीवित लोगों के लिए और न ही मृत लोगों के लिए इस प्रकार शोक करते हैं। इस श्लोक का संदेश यह नहीं है कि दुख महसूस करना गलत है। बल्कि यह समझना जरूरी है कि दुख के बीच भी जीवन की सच्चाई को समझने और विवेक बनाए रखने का प्रयास किया जाना चाहिए। गीता में बताया गया है कि आत्मा अमर है। शरीर मिट जाता है, मगर आत?मा कभी नहीं मरती। श्रीकृष्ण बताते हैं कि शरीर नश्वर है, जबकि आत्मा को शाश्वत माना गया है। मृत्यु जीवन की एक ऐसी सच्चाई है, जिसे मनुष्य अपनी इच्छा से बदल नहीं सकता। इस विचार को समझने से किसी अपने को खोने का दर्द तुरंत समाप्त नहीं होता, लेकिन यह जीवन और मृत्यु की सच्चाई दिखाती है और दुख से निपटने में मदद करती है। किसी प्रियजन की यादें, उनके संस्कार और उनसे मिली सीख हमारे जीवन में में हमेशा रहती हैं। भले ही वह व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से हमारे बीच न हो, मगर उसी सीख हमेशा हमारे साथ होती हैं। संसार में निरंतर परिवर्तन होता रहता है। समय, परिस्थितियां और रिश्तों के स्वरूप बदलते रहते हैं। किसी अपने के जाने के बाद इस सच्चाई को स्वीकार करना बेहद कठिन होता है। फिर भी धीरे-धीरे वास्तविकता को स्वीकार करना मन को संभलने में मदद करता है। स्वीकार करने का अर्थ यह नहीं कि हम उस व्यक्ति को भूल जाएं या उससे जुड़े प्रेम को कम कर दें। इसका अर्थ है कि उसकी यादों को अपने जीवन का हिस्सा बनाते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करें। किसी प्रियजन के निधन पर रोना, उदास होना और उनकी कमी महसूस करना स्वाभाविक है। गीता में भावनाओं को दबाने के बजाय विवेक और धैर्य के साथ जीवन का सामना करने की प्रेरणा दी गई है। ऐसे समय में परिवार और मित्रों के साथ समय बिताना, अपनी भावनाएं साझा करना उपयोगी हो सकता है। दुख से उबरने के लिए हर व्यक्ति को अलग-अलग समय की जरूरत होती है।

करवा चौथ : अखण्ड सौभाग्य के लिए सुहागिन महिलाएं रखेंगी व्रत

हिन्दू सनातन धर्म में पौराणिक मान्यता के अनुसार देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना करके व्रत-उपवास रखने की विशेष महत्ता है। हिन्दू धर्म में कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को करवा चौथ (करक चतुर्थी) का व्रत रखा जाता है। करवा चौथ व्रत से विशिष्ट कामना की पूर्ति होती है। यह सुहागिन महिलाओं का अत्यधिक लोकप्रिय व्रत है। यह व्रत हर्ष, उल्लास व उमंग के साथ अपने पति की दीर्घायु के लिए रखा जाता है। प्रख्यात ज्योतिषविद् विमल जैन ने बताया कि कार्तिक कृष्णपक्ष की चतुर्थी तिथि बुधवार, 28 अक्टूबर को अर्द्धरात्रि के पश्चात् 1 बजकर 07 मिनट पर लगेगी जो कि अगले दिन गुरुवार, 29 अक्टूबर को रात्रि 10 बजकर 11 मिनट तक रहेगी, तत्पश्चात् पंचमी तिथि लग जाएगी। रोहिणी नक्षत्र बुधवार, 28 अक्टूबर को दिन में 1 बजकर 26 मिनट से गुरुवार, 29 अक्टूबर को दिन में 11 बजकर 12 मिनट तक रहेगा, तत्पश्चात् मृगशिरा नक्षत्र लग जाएगा, जो कि सम्पूर्ण दिन रहेगा। काशी में चन्द्रोदय रात्रि 8 बजकर 01 मिनट पर होगा। अन्य जगहों पर चन्द्रोदय का समय अलग-अलग होता है, जो कि स्थानीय पंचांगों में दिया रहता है। फलस्वरूप गुरुवार, 29 अक्टूबर को करवा चौथ का व्रत रखा जाएगा। प्रख्यात ज्योतिषविद् विमल जैन ने बताया कि सुहागिन व्रती महिलाएँ प्रात:काल अपने समस्त दैनिक कृत्यों से निवृत्त होकर अपने देवी-देवता की आराधना के पश्चात् अखण्ड सौभाग्य, यश-मान, प्रतिष्ठा, सुख-समृद्धि, खुशहाली एवं पति की दीर्घायु के लिए करवा चौथ के व्रत का संकल्प लेती हैं। यह व्रत निराहार व निराजल रहते हुए किया जाता है। सौभाग्यवती महिलाएँ कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्थी तिथि के दिन सुख-समृद्धि व अखण्ड सौभाग्य के लिए व्रत-उपवास रखकर देवाधिदेव भगवान शिव, माता पार्वती, भगवान श्रीगणेश एवं श्रीकार्तिकेयजी की पूजा-अर्चना करती हैं। करवा चौथ से सम्बन्धित वामनपुराण में वर्णित व्रत कथा का श्रवण करने का भी विधान है। व्रत के दिन सुहागिन महिलाएँ नव-परिधान व आभूषण धारण करके पूजा-अर्चना करती हैं। पूजा क्रम में करवा जो कि सोना, चांदी, पीतल या मिट्टी का होना चाहिए। लोहे या अल्युमीनियम धातु का नहीं होना चाहिए। करवा में जल भरकर सौभाग्य व श्रृंगार की समस्त वस्तुएँ थाली में सजाकर रखी जाती है। व्रती महिलाएँ अपने पारिवारिक परम्परा व धार्मिक विधि-विधान के अनुसार रात्रि में चन्द्र उदय होने के पश्चात् चन्द्रमा को अर्घ्य देकर उनकी पूजा-अर्चना करती हैं। तत्पश्चात् चन्द्रमा को चलनी से देखकर उनकी आरती उतारती हैं। घर-परिवार में उपस्थित सास-श्वसुर, जेठ एवं अन्य श्रेष्ठजनों को उपहार देकर उनसे आशीर्वाद लेती हैं। साथ ही सुहाग की समस्त वस्तुएँ अन्य सुहागिन महिलाओं को देकर उनका चरण स्पर्श कर खुशहाल जीवन का आशीर्वाद लेती हैं। अपने खुशहाल जीवन के लिए तथा पति-पत्नी के रिश्ते को और अधिक मधुर व प्रगाढ़ बनाने के लिए करवा चौथ का व्रत विशेष लाभदायी बतलाया गया है। ज्योतिषशास्त्र के मुताबिक अपनी जन्मतिथि व राशि के अनुसार अपने परिधान धारण करके पूजा करना भाग्य में चार चाँद लगाता है।



जन्मतिथि के अनुसार रंगों का चयन- जिनका जन्म 1, 10, 19 या 28 को हुआ हो, उनके लिए-लाल, गुलाबी, नारंगी। 2, 11, 29 के लिए-चमकीला सफेद और क्रीम। 3, 12, 21 एवं 30 के लिए-पीला या सुनहला पीला। 4, 13, 22, 31 के लिए-चमकीला एवं मिश्रित चटकीला रंग। 5, 14, 23 के लिए-चमकीला सफेद व सफेद। 7, 16, 25 के लिए-चमकीला तथा मिश्रित रंग। 8, 17, 26 के लिए-नीला व भूरा रंग। 9, 18, 27 के लिए-लाल, गुलाबी, नारंगी।

राशि के अनुसार करें परिधान धारण-करवा चौथ के पर्व को और अधिक खुशनुमा बनाने के लिए राशियों के रंग के मुताबिक महिलाएँ परिधान धारण करें तो सौभाग्य में वृद्धि तो होगी ही साथ ही उनको अन्य लाभ भी मिलेगा। सामान्यत: सुनहरा, पीला और लाल रंग के परिधान धारण करना शुभ माना गया है। लाल रंग से ऊष्मा व ऊर्जा का संचार होता है, वहीं पर सुनहले व पीले रंगों से जीवन में प्रसन्नता मिलती है। आजकल राशि के अनुसार आभूषण व परिधान धारण करने का प्रचलन बढ़ रहा है। कौन-सा रंग किस राशियों के लिए लाभदायक रहेगा—मेष-लाल, गुलाबी एवं नारंगी। वृषभ-सफेद एवं क्रीम। मिथुन-हरा व फिरोजी। कर्क-सफेद व क्रीम। सिंह-केसरिया, लाल व गुलाबी। कन्या-हरा व फिरोजी। तुला-सफेद व हल्का नीला। वृश्चिक-नारंगी, लाल व गुलाबी। धनु-पीला व सुनहरा। मकर व कुम्भ-भूरा, स्लेटी व ग्रे। मीन-पीला व सुनहरा।